सोजॉर्नर ट्रुथ

कौन थीं?

योना ज़ेल्डिस मैकडोनो

चित्र: जिम एल्ड्रिज

सोजॉर्नर ट्रुथ

कौन थीं?

सोजॉर्नर ट्रुथ
कौन थीं?

योना ज़ेल्डिस मैकडोनो
चित्र: जिम एल्ड्रिज

विषयवस्तु

सोजॉर्नर ट्रुथ कौन थीं?

1 जून, 1843

एक लंबी महिला न्यूयॉर्क फेरी (नाव) पकड़ने के लिए नीचे उतरी, उसने किराया चुकाया और आगे बढ़ गई.

हालाँकि वो महिला काली थी और एक गुलाम के रूप में पैदा हुई थी, लेकिन अब वो अपनी इच्छानुसार कहीं भी आने-जाने को स्वतंत्र थी. जब नाव की यात्रा समाप्त हुई, तो वो घाट से उतरी और चलने लगी. जल्द ही, शहर की हलचल उसके पीछे छूट गई. कुछ देर बाद उसे प्यास लगी तो वो एक खेत में पानी मांगने के लिए रुकी. पानी देने वाली महिला ने उससे उसका नाम पूछा. लंबी महिला ने इस बारे में सोचा. उसका एकमात्र नाम एक दासी का नाम था, जो उसके मालिक ने उसे दिया था. लेकिन अब वो पुराना नाम नहीं चाहती थी. वो एक नया जीवन शुरू कर रही थी. अब वो आगे बहुत यात्रा करने वाली थी. और वो परमेश्वर का वचन फैलाने वाली थी.

तो, ठीक उसी समय और वहीं उसने खुद को एक नया नाम दिया. उसने खुद को सोजॉर्नर ट्रूथ बुलाने का फैसला किया, और यह उसकी कहानी है.

अध्याय 1

शुरुआती दिन

1797 के आसपास, जेम्स और बेट्सी नाम के गुलामों की एक बच्ची का जन्म हुआ. उसका नाम इसाबेला था. उसका उपनाम बेले था. क्योंकि उसके माता-पिता गुलाम थे, इसलिए इसाबेला भी गुलाम थी.

इसका मतलब था कि वे किसी के दास थे. वे मुक्त नहीं थे. उनका मालिक जोहान्स हार्डनबर्ग नाम का एक गोरा आदमी था. चूंकि मिस्टर हार्डनबर्ग हॉलैंड से थे, ओर वो डच बोलते थे. इसलिए बेले भी डच भाषा बोलते हुई बड़ी हुई.

जेम्स और बेट्सी ने मिस्टर हार्डनबर्ग के फार्म पर बहुत मेहनत की. लेकिन मालिक ने उन्हें कोई पैसे नहीं दिए. वे मालिक को छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकते थे. उन्हें वही करना पड़ता था जो उनका मालिक कहता था. वो एक कठोर और भयानक जीवन था. उनके कई बच्चे थे - शायद बारह. उनमें से लगभग सभी को मिस्टर हार्डनबर्ग ने बेच दिया था. बेट्सी और जेम्स ने अपने उन बच्चों को फिर कभी नहीं देखा.

बेले और उसके माता-पिता जिस फ़ार्म पर रहते थे, वो न्यूयॉर्क के स्वार्टकिल में था. बहुत से लोग सोचते हैं कि गुलामी केवल वर्जीनिया, लुइसियाना, जॉर्जिया, अलबामा और मिसिसिपी जैसे दक्षिणी राज्यों में मौजूद थी. लेकिन 1700 के दशक में, कई उत्तरी राज्यों में भी गुलामी कानूनी रूप में मान्य थी.

जब बेले लगभग तीन वर्ष की थी, तब जोहान्स हार्डनबर्ग की मृत्यु हो गई. उनके बेटे चार्ल्स को उनकी सारी संपत्ति विरासत में मिली. इसका मतलब था कि अब चार्ल्स के पास अपने पिता का घर, जमीन, घोड़े और उनकी गायें थीं. और साथ में उनके पिता अपने पिता के गुलाम भी थे.

चार्ल्स दासों और जानवरों को अपने घर ले गया. उसके पास इन लोगों के लिए कोई जगह नहीं थी, इसलिए उन्हें तहखाने में रहना पड़ा. तहखाना ठंडा, अंधेरा और नम था. वो बदबूदार और भीड़भाड़ वाली जगह थी - वहाँ बारह दास रहते थे. बेले का बिस्तर एक लकड़ी का बोर्ड था.

परिवार के तहखाने में चले जाने के कुछ समय बाद, बेले को एक आश्चर्य हुआ. उसके एक नया भाई का जन्म हुआ. उसका नाम पीटर था

बेट्सी अपने बेटे को लेकर खुश थी. लेकिन बेट्सी चिंतित भी थी. उसके अन्य बच्चे बेच दिए गए थे. बेले और पीटर को भी बेचा जा सकता है. बेट्सी को उम्मीद थी कि भगवान उनकी रक्षा करेंगे. जैसे-जैसे बेट्सी के बच्चे बड़े हुए, उसने अपने बच्चों को स्वर्ग में रहने वाले परमेश्वर के बारे में बताया. जब भी वे डरे हुए या उदास होते, वे हमेशा परमेश्वर से मदद मांग सकते थे.

1806 में, चार्ल्स हार्डनबर्ग की मृत्यु हो गई. तब बेले लगभग नौ साल की थी. अब उसके परिवार का क्या होगा? अंतिम संस्कार के तुरंत बाद, चार्ल्स की संपत्ति बेच दी गई. बूढ़े होने के कारण बेले के पिता जेम्स ज्यादा काम नहीं कर सकते थे. उनकी पीठ मुड़ी और झुकी हुई थी. उन्हें गठिया भी था. वो एक ऐसी बीमारी थी जिससे उनके हाथ और पैर अपंग हो गए थे.

जेम्स जैसे गुलामों को बेचना मुश्किल था. अक्सर, उन्हें अपने मालिक द्वारा "बाहर" निकाल दिया जाता था. इसका अर्थ था कि अब वे मुक्त थे. लेकिन उनके पास न तो रहने के लिए कोई घर था और न ही ज़िंदा रहने के लिए पैसे. वे वृद्ध थे और अक्सर बीमार रहते थे, और वे अपनी देखभाल करने में असमर्थ थे. परिणामस्वरूप, ये दास अक्सर मर जाते थे. जेम्स के साथ, बेट्सी को भी बाहर निकाल दिया गया था. अब वे कहाँ जायेंगे? उन्होंने मालिक से वहीं रहने की विनती की. हार्डनबर्ग परिवार उसके लिए सहमत हो गया. वे तहखाने में रह सकते थे.

बेले और पीटर युवा थे और वे कड़ी मेहनत कर सकते थे. स्वस्थ दास, विशेषकर लड़के, बहुत कीमत पर बिकते थे. एक गुलाम नीलामी में, वे दोनों बिक गए. पीटर पहले बिका.

पीटर एक ऐसे आदमी के पास गया जो पास में नहीं रहता था. उससे बेले बहुत उदास हुई. लेकिन माँ ने परमेश्वर के बारे में जो कुछ बताया था उससे उसे कुछ सांत्वना मिली. परमेश्वर उसकी रक्षा करेंगे. इसलिए बेले ने चुपचाप एक प्रार्थना दोहराई जिसे वो जानती थी.

पीटर के बेचे जाने के बाद, फिर बेले के बिकने की बारी थी. नीलामकर्ता ने उसका नाम पुकारा और खरीदारों को उसके बारे में बताया. वो अंग्रेजी नहीं जानती थी. क्योंकि वो केवल डच बोलती थी, इसलिए वो नीलामकर्ता ने क्या कहा वो समझ नहीं पाई. लेकिन फिर भी उसे मुख्य बात स्पष्ट रूप से समझ में आ गई.

पहले बेले का कोई खरीदार नहीं था. फिर नीलामकर्ता ने उसके साथ भेड़ों का एक झुंड भी जोड़ दिया. अंत में, जॉन नेली नाम के एक व्यक्ति ने उसे एक सौ डॉलर में खरीदा.

गुलाम नीलामी

अफ्रीका से लाये गुलामों को अमरीका में नीलामी में बेचा जाता था. उन्हें बाड़ों में रखा जाता था, और उनकी त्वचा स्वस्थ दिखने के लिए उसपर तेल या कोलतार मला जाता था. उन्हें मवेशियों की तरह गर्म लोहे से दागा जाता था. खरीदार, गुलामों को उनका मुंह खोलने के लिए मजबूर करते थे और देखते थे क्या उनके दांत अच्छे थे, और ताकत के लिए वे उनकी मांसपेशियों का परीक्षण करते थे. सबसे बड़े, और मजबूत दिखने वाले गुलामों को सबसे पहले खरीदा जाता था क्योंकि सोच यह थी कि वे सबसे कठिन काम कर पाएंगे. उससे गुलामों के परिवार बंट जाते थे, और फिर परिवार के सदस्य एक-दूसरे को कभी नहीं देख पाते थे.

"पकड़ो और भागो" नीलामी में, खरीदार, गुलाम व्यापारी को एक निश्चित राशि देता था. फिर ढोल बजता था और गुलामों का बाड़ा खुलता था. ख़रीदार दौड़ा हुआ जाता था और उस दास को पकड़ता था जिसे वो चाहता था. "उच्चतम बोली" वाली नीलामी में, एक समय में एक दास को ही दिखाया जाता था. यदि एक से अधिक खरीदार उस गुलाम को चाहते, तो खरीदार बोली लगाते थे. जो खरीदार सबसे अधिक बोली लगाता था वही जीतता था.
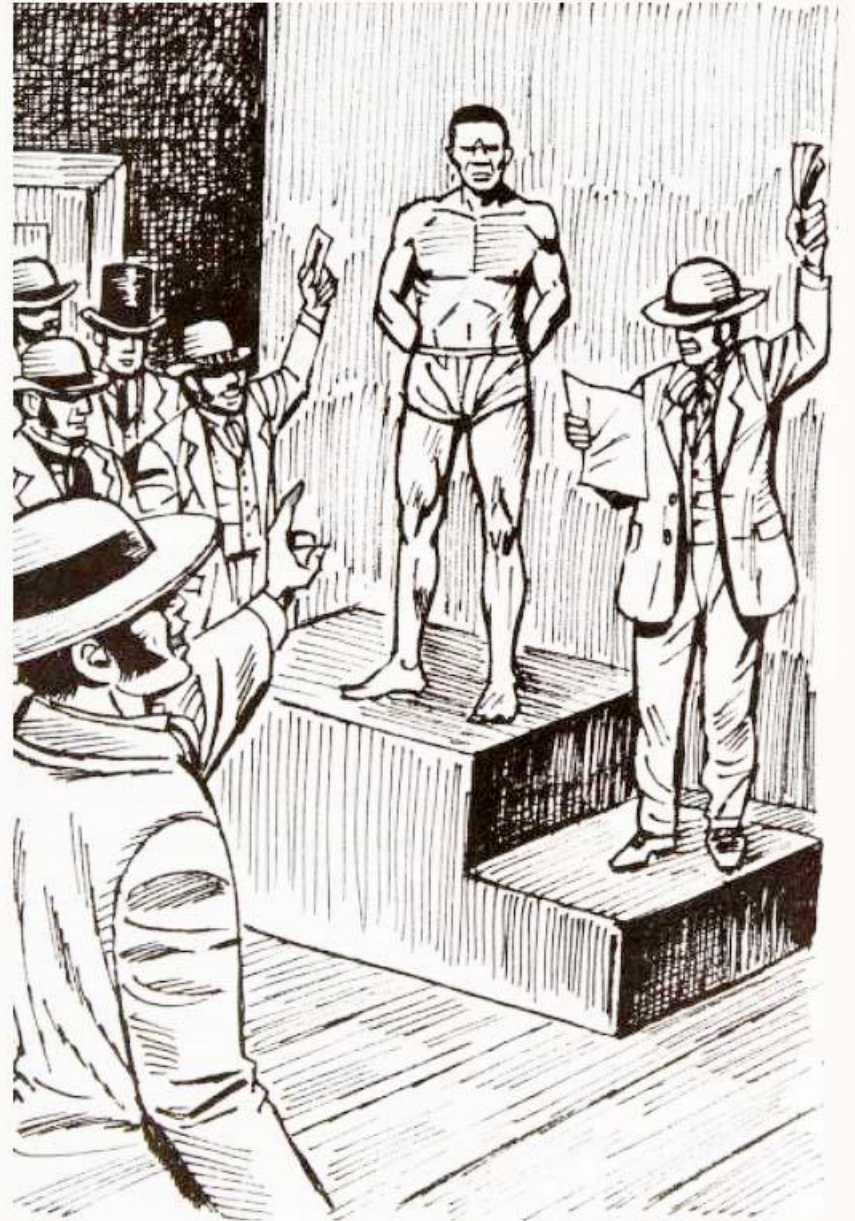
मिस्टर नेली ने सोचा कि उन्हें एक अच्छा सौदा मिल गया था. लेकिन उनकी पत्नी को ऐसा नहीं लगा था. नेली इंग्लैंड के थे. वे डच नहीं अंग्रेजी बोलते थे. वे किंग्स्टन, न्यूयॉर्क के पास रहते थे और एक स्टोर चलाते थे. उनकी दुकान ठीक से नहीं चल रही थी. आस-पास रहने वाले अधिकांश लोग डच थे, जिन्हें अंग्रेज़ मालिकों पर भरोसा नहीं था, इसलिए वे उनकी दुकान से खरीदारी नहीं करते थे. मिसेज़ नेली, बेले पर डच बसने वालों का गुस्सा निकालती थीं.

बेले, नेली की एकमात्र गुलाम थी. नेली उससे घर की सफाई और खाना बनाने का काम करवाते थे.

बेले को अपना नया जीवन कठिन लगा. उसे अपने माता-पिता की याद आती थी, और चूंकि वो अंग्रेजी नहीं बोलती थी, इसलिए वो अपने नए मालिकों की बात समझ नहीं पाती थी. बेले ने अंग्रेजी सीखने की पूरी कोशिश की, लेकिन मिसेज़ नेली एक अच्छी टीचर नहीं थीं. जब बेले कोई शब्द गलत बोलती, तो मिसेज नेली उसे थप्पड़ मारती थीं.

एक रविवार की सुबह, मिसेज़ नेली इतनी पागल हुईं कि उन्होंने बेले को खलिहान में भेज दिया. मिस्टर नेली वहाँ बेले की प्रतीक्षा कर रहे थे. उन्होंने बेले को इतनी बेरहमी से पीटा कि वो बेहोश हो गई. बेले को पहले कभी नहीं पीटा गया था. फिर बेले ने खुद से कहा कि आइंदा से पिटने से बचने के लिए वो अतिरिक्त मेहनत करेगी.

श्राइवर के पास एक खेत और एक सराय भी था. श्राइवर और उसकी पत्नी पढ़े-लिखे नहीं थे. लेकिन वे क्रूर नहीं थे. और वे डच और अंग्रेजी दोनों बोलते थे. इससे बेले का जीवन आसान हो गया, और अब वो आसानी से अंग्रेजी सीख पाई.

अगले अठारह महीनों तक बेले, श्राइवर के साथ रही. अब वो अपने पिता की तरह ही लंबी और मजबूत हो गई थी. वो दिन भर काम करती थी. जब मछली पकड़ने वाली नावें वापिस आतीं, तो वो मछली उतारने में मदद करती. उसने खेतों में, मक्का लगाई—और खेतों की गुड़ाई भी की. उसने बाकी छोटे-मोटे कामों के साथ-साथ सराय में भी काम किया.

कुछ दिनों बाद बेले के पिता उससे मिलने आए. उन्होंने देखा कि बेले के पास जूते नहीं थे. उसके पतले कपड़े सर्दी में उसका बचाव नहीं कर रहे थे. जेम्स बीमार और बूढ़े थे. फिर भी उन्होंने बेले की पीड़ा देखी और वो उसकी मदद करना चाहते थे. चूँकि जेम्स को उसके मालिक ने निकाल दिया गया था, इसलिए वो अब गुलाम नहीं था, लेकिन उसके पास बेले को खरीदने और उसे आज़ाद करने के लिए पैसे नहीं थे. शायद वो किसी दूसरे तरीके से बेले की मदद कर सके.

फिर जेम्स ने मार्टिन श्राइवर से बेले को खरीदने को कहा. श्राइवर एक मछुआरा था.

उसके अन्य मालिकों के विपरीत, श्राइवर्स ने बेले को पर्याप्त भोजन, गर्म कपड़े और रहने के लिए एक अच्छी जगह दी. लेकिन दयालु होने के बावजूद, उन्होंने बेले को स्कूल जाने नहीं दिया. दासों को पढ़ना-लिखना सीखने पर पाबंदी थी. अवज्ञा करने वालों को कड़ी सजा दी जाती थी.

जब बेले, श्राइवर्स के साथ थी तब उसे एक भयानक खबर मिली. उसकी मां की मृत्यु हो गई थी. अब उसका परिवार फिर कभी नहीं जुड़ पाएगा. और अब उसके पिता का क्या होगा? वो अपने दम पर ज़िंदगी नहीं चला पाएंगे. बेले की चिंता सही थी. उसके पिता की मृत्यु भी उसकी माँ के जाने के कुछ दिनों बाद हो गई. अपने भाई से दूर, अब बेले दुनिया में बिल्कुल अकेली थी. एक बार फिर उसे अपनी माँ की बात याद आई. भगवान उसे देख रहे थे. परमेश्वर उसकी परवाह करेंगे. वो कभी भी अकेली नहीं होगी.

एक दिन एक आदमी सराय के शराबखाने में आया. उसने देखा कि बेले कितनी ताकतवर थी और उसे तीन सौ डॉलर में खरीदने की पेशकश की. श्राइवर्स ने बेले के लिए जो पैसे दिए थे वो उससे तीन गुना अधिक थे.

इसलिए श्राइवर्स ने बेले को बेच दिया. बेले अपने नए मालिक जॉन ड्यूमॉन्ट के साथ न्यू पाल्ट्ज गई. उसे नहीं पता था कि नया मालिक कैसा होगा. लेकिन उसे उसका जल्द ही पता चल जायेगा.

अध्याय दो

स्वतंत्रता आगे

1810 में, जॉन ड्यूमॉन्ट ने अपनी रिकॉर्ड बुक में लिखा था कि बेले "लगभग तेरह" साल की थी, लेकिन वो "लगभग छह फीट लंबी" थी. ड्यूमॉन्ट उसके बारे में डींग मारता था. ड्यूमॉन्ट ने कहा कि बेले उसके सबसे ताकतवर पुरुष दासों से भी अधिक काम कर सकती थी. लेकिन उसकी पत्नी, बेले को पसंद नहीं करती थीं. पत्नी ने अपनी सफेद नौकरानियों से कहा कि वे गरीब बेले पर "अपना रोब जमाएं". इसका मतलब था कि वे बेले की ज़िंदगी को कठिन बनाएं. वास्तव में, मिसेज़ ड्यूमॉन्ट चाहती थीं कि वे बेले को "सताएं."

एक बार, जब बेले ने आलू उबाले, तो मिसेज़ ड्यूमॉन्ट ने उसे डांटा. उन्होंने कहा कि मटके का पानी गंदा था. इसलिए अगले दिन, बेले ने आलूओं को बहुत अच्छी तरह से रगड़ा. उबालने के लिए पानी में डालने से पहले आलू साफ थे. लेकिन बाद में जब मिसेज़ ड्यूमॉन्ट ने बर्तन में देखा तो पानी गंदा था

मिसेज़ ड्यूमॉन्ट बहुत गुस्सा हुईं. बेले की समझ में नहीं आया कि वो सब कैसे हुआ.

सौभाग्य से, बेले की घर में एक दोस्त थी. गर्ट्रूड, मिसेज़ ड्यूमॉन्ट की दस वर्षीय बेटी थी, जो बेले को पसंद करती थी. गर्ट्रूड को लगा कि नौकरानियों में से केटी सबसे बड़ी समस्या थी. फिर उसने एक योजना बनाई. बेले आलू उबालने के लिए रखने के बाद फिर गाय का दूध दूहने चली जाती. गर्ट्रूड रसोई में छिप गई. उसने कैटी को अंदर आते और बर्तन में राख छिड़कते हुए देखा. गर्ट्रूड तुरंत अपने छिपने की जगह से बाहर कूदी. उसने अपने माता-पिता को वो बताया जो केटी ने क्या किया था. उसके बाद बेले पर दोष नहीं मढ़ा गया.

गर्ट्रूड की दया के बावजूद, बेले ड्यूमॉन्ट के घर में अकेली थी. फिर उसकी मुलाकात रॉबर्ट से हुई. वो भी एक गुलाम था. बेले ने पहली बार रोबर्ट को एक भोज में देखा था जो ईस्टर के पचास दिन बाद आता था. तब नाच-गाना और खाना-पीना होता था. फिर रॉबर्ट, बेले से मिलने आने लगा. उन्हें एक-दूसरे से प्यार हो गया.

रॉबर्ट के मालिक मिस्टर कैटलिन को वो पसंद नहीं आया. वो चाहते थे कि रॉबर्ट उनकी ही एक महिला गुलाम से शादी करे. उस तरह, पैदा होने वाले बच्चे भी मिस्टर कैटलिन के ही होते. अगर रॉबर्ट और बेले के बच्चे होते, तो फिर वे मिस्टर ड्यूमॉन्ट के होते. लेकिन रॉबर्ट ने अपने मालिक की बात नहीं मानी. वह गुप्त रूप से बेले से मिलता रहा. फिर मिस्टर कैटलिन ने उसे पकड़ा और रॉबर्ट की जमकर पिटाई की.
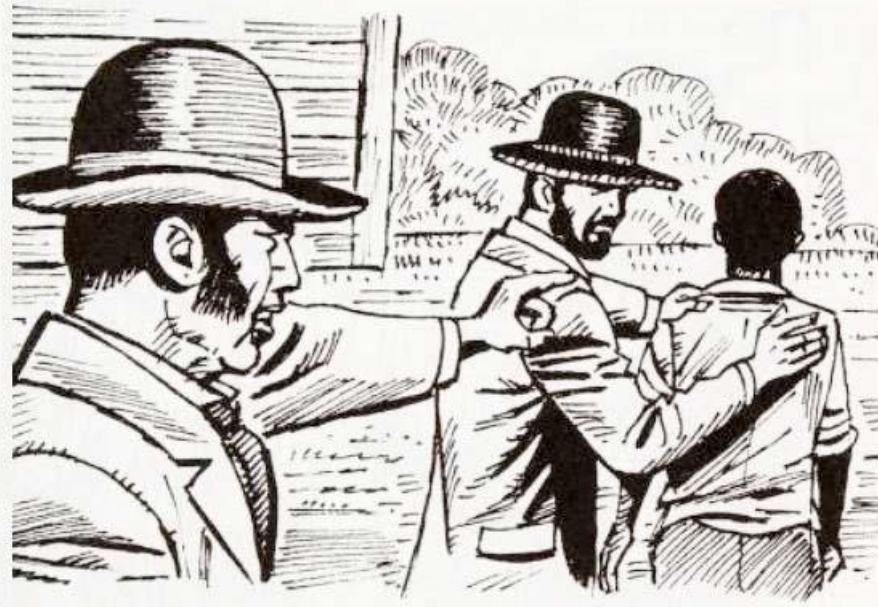
बेले ने मिस्टर ड्यूमॉन्ट से कुछ करने की विनती की. हालांकि यह अत्यधिक असामान्य था, मिस्टर ड्यूमॉन्ट ने मिस्टर कैटलिन से पिटाई रोकने के लिए कहा. उन्होंने मिस्टर कैटलिन को उनका फार्म छोड़ने का आदेश दिया. फिर वो यह सुनिश्चित करने के लिए उनके घर गये कि वो रॉबर्ट को जान से न मारें. लेकिन मिस्टर कैटलिन, रॉबर्ट को जान से नहीं मारना चाहते थे. वो चाहते थे कि रॉबर्ट उनकी बात मान जाए. और उससे काम बन गया. फिर रॉबर्ट, बेले से मिलने नहीं आया. उसने उस स्त्री से विवाह किया जिसे उसके मालिक ने चुना था.

जब उसकी पहली पत्नी को बेचा गया तो टॉम उसे खोजने के लिए भाग गया. वो उससे बहुत प्यार करता था. टॉम उसे कभी नहीं ढूंढ पाया लेकिन दास पकड़ने वालों ने टॉम को पकड़ लिया. उन्होंने उसे वापस ड्यूमॉन्ट के पास भेजा, जहाँ उसे पीटा गया. उसके ज़ख्मों के निशानों ने बेले को रुला दिया. टॉम एक अच्छा इंसान था.

शादी के एक साल बाद. बेले और टॉम की एक बेटी डायना हुई. अगले दस वर्षों में, उनके चार और बच्चे हुए: एलिजाबेथ, हन्ना, पीटर और सोफिया.

मिस्टर ड्यूमॉन्ट ने फैसला किया कि बेले को एक पति की जरूरत थी. उसके लिए उन्होंने थॉमस नाम के अपने एक दास को चुना. बेले चाहती थी कि कोई पादरी उनकी शादी करवाए और मिस्टर ड्यूमॉन्ट उसके लिए सहमत हो गए. बेले और थॉमस की शादी 1817 के आसपास हुई. तब बेले की उम्र लगभग बीस साल थी.

बेले और टॉम एक दूसरे की देखभाल करते थे. टॉम पहले से ही शादी-शुदा था.

गुलाम पकड़ने वाले

1857 में, ड्रेड स्कॉट नाम के एक व्यक्ति से जुड़ा एक लैंडमार्क कोर्ट केस हुआ. स्कॉट एक गुलाम था जो अपने स्वामी से बचकर भाग गया था और कई वर्षों तक एक स्वतंत्र राज्य में रहा था. लेकिन अदालत ने फैसला किया कि इसका मतलब यह नहीं था कि स्कॉट आज़ाद था. वो अब भी गुलाम था और उसे अपने मालिक के पास लौटना चाहिए था. निर्णय के परिणामस्वरूप, अब भागे हुए दासों को पकड़ने और उन्हें उनके मालिकों को लौटाने के लिए लोग धन कमाने लगे. गुलाम पकड़ने वाले लोग, भगोड़े गुलामों का शिकार करते थे. उन्हें पकड़े गए हर गुलाम के लिए पैसे मिलते थे. लौटने वाले दासों को बेरहमी से कोड़ों से दंडित किया जाता था.
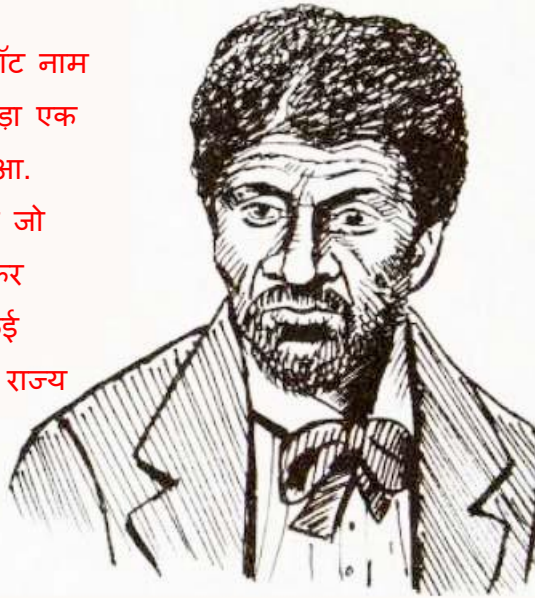
ड्रेड स्कॉट

सन् 1817 में आश्चर्यजनक समाचार आया! न्यूयॉर्क राज्य में एक नया कानून पारित किया गया था. 4 जुलाई, 1799 से पहले पैदा हुए सभी दासों को 4 जुलाई, 1827 तक मुक्त किया जाना था. इसका मतलब था कि बेले और उनके पति को दस साल में आज़ाद कर दिया जाएगा. (चूंकि उनके बच्चों का जन्म 1799 के बाद हुआ था, वे तब तक मुक्त नहीं होंगे जब तक कि लड़के अट्ठाईस और लड़कियां पच्चीस वर्ष की नहीं हो जातीं.) जॉन ड्यूमॉन्ट ने यह भी वादा किया कि वो 1826 में, बेले और टॉम को मुक्त कर देगा, कानूनी मुक्ति से एक साल पहले. वे उसकी जमीन पर एक केबिन में रह सकते थे.

एक साल जल्दी स्वतंत्रता के बदले में, बेले सामान्य से अधिक घंटों तक काम करने के लिए तैयार हो गई. वो खेतों में फसल बोने का काम करती थी. वो घर में कपड़े धोने, खाना बनाने और साफ-सफाई का काम करती थी. वो ऊन के बड़े-बड़े ढेरों का, बुनाई के लिए सूत कातती थी.

फिर उसके हाथ को एक दराँती से चोट लगी. दराँती घास या फ़सल काटने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक तेज़ धार वाला औज़ार होता है. उसका घाव ठीक नहीं हुआ. फिर भी, वो वादे अनुसार अपना काम करती रही. लेकिन जब उसकी स्वतंत्रता का दिवस आया, तो मिस्टर ड्यूमॉन्ट अपने वादे से मुकर गए. उन्होंने कहा कि बेले अपने घायल हाथ से ज्यादा काम नहीं कर पाई थी. इसलिए पुराना समझौता रद्द हो गया था.

बेले बहुत गुस्से में थी. टॉम ने उसे परेशान न होने को कहा - वो अगले साल मुक्त हो जाएंगे. लेकिन बेले ने उसका इंतजार नहीं किया. अगले दिन वो जल्दी उठी और उसने अपना कुछ सामान एक तकिए के खोल में रखा. उसे पता था कि वो सभी बच्चों को अपने साथ नहीं ले जा सकती थी, इसलिए उसने चार सबसे बड़े बच्चों को टॉम के साथ छोड़ दिया और केवल छोटी बच्ची, सोफिया को ही अपने साथ लिया.
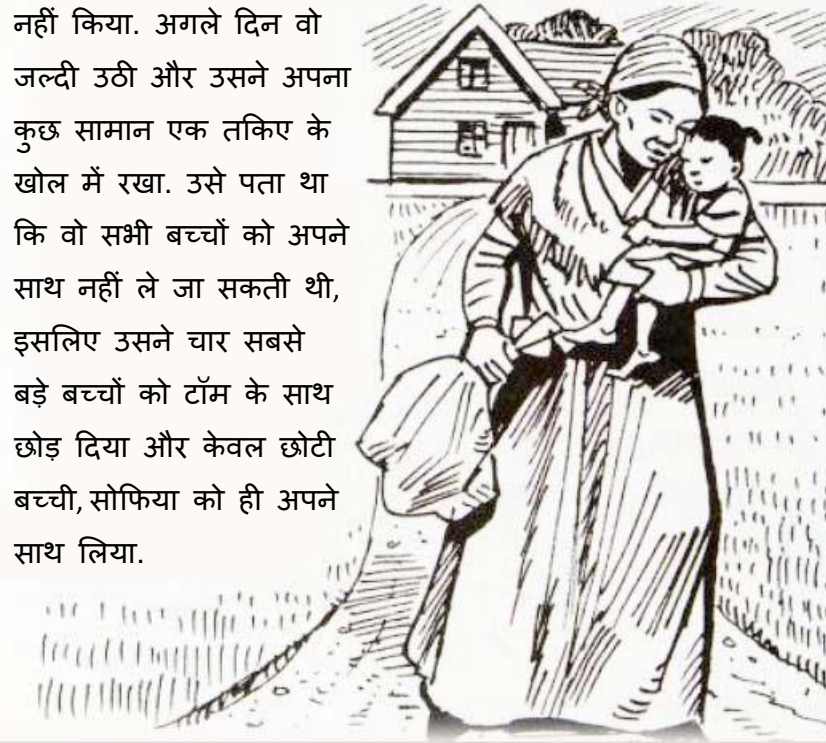
फिर वो मिस्टर ड्यूमॉन्ट का खेत छोड़कर चुपके से बाहर निकल गई.

बेले, वान वैगनर्स नाम के एक गोरे परिवार के घर गई. उसे वान वैगनर्स के बारे में, पास में रहने वाले एक क्वेकर - लेवी रोवे ने बताया था. वान वैगनर, उन्मूलनवादी थे. इसका मतलब था कि वे गुलामी को गलत मानते थे. वे भगोड़े दासों की मदद के लिए कुछ भी करने को तैयार थे. वान वैगनर्स ने बेले और उसके बच्चे को उनके साथ रहने दिया. बेले अब उनके लिए काम करेगी, लेकिन वे उसके मालिक नहीं होंगे. वो जब चाहे उन्हें छोड़कर जा सकती थी.

क्वेकर

क्वेकर्स, जिन्हें "फ्रेंड्स" भी कहा जाता था, एक ईसाई समूह था जो इंग्लैंड में 1600 के मध्य में शुरू हुआ था. क्वेकर्स मानते थे कि लोगों को भगवान के साथ संवाद करने के लिए पादरियों की आवश्यकता नहीं थी. इसके बजाय, कोई भी व्यक्ति सीधे परमेश्वर से बात कर सकता था. जो क्वेकर्स उन्नीसवीं सदी के अमेरिका में रहते थे. वे सादे और साधारण कपड़े पहनते थे. वे सभी हिंसा के खिलाफ थे और किसी भी युद्ध में लड़ने से साफ़ इनकार करते थे. वे उन्मूलनवादी भी थे और उन्होंने कई गुलामों की आज़ादी के लिए भागने में मदद करके अपने जीवन को जोखिम में डाला था.

कुछ समय बाद, जॉन ड्यूमॉन्ट ने बेले को एक नए घर में पाया. वो बेले को वापस चाहता था, लेकिन बेले ने जाने से इनकार कर दिया. वान वैगेनर ने बेले को एक साल पहले मुक्त करने के लिए बीस डॉलर का भुगतान किया. उन्होंने सोफिया के लिए भी पांच डॉलर का भुगतान किया. बेले और उसका बच्चा आखिरकार आज़ाद हो गए. लेकिन बेले की खुशी अल्पकालिक थी. उसे पता चला कि उसके बेटे, पीटर को अलबामा में दास मालिकों को बेच दिया गया था. वो उसे फिर कभी नहीं देख पाएगी.

बेले यह स्वीकार नहीं कर सकी. अपने क्वेकर दोस्तों से बेले को पता चला कि पीटर को दक्षिणी राज्य में बेचना कानून के खिलाफ था.

न्यूयॉर्क में, आप गुलामों को राज्य के बाहर नहीं बेच सकते थे. तो कानून बेले की तरफ था. बाद में बेले ने याद किया, "मुझे यकीन था कि भगवान मुझे उसे पाने में मदद करेंगे. क्यों, मैं अंदर से इतना अच्छा महसूस कर रही थी - मुझे ऐसा लग रहा था जैसे पूरे राष्ट्र की शक्ति मेरे साथ हो."

बेले के क्वेकर दोस्तों ने उसे बताया कि उसे क्या करना चाहिए. उन्होंने उसे पॉपप्लेटाउन, न्यूयॉर्क भेज दिया. वो किंग्स्टन में, काउंटी सीट के करीब था. क्वेकर दंपति के वहां दोस्त थे जिन्होंने उसे अपने घर में रहने दिया. फिर बेले, पॉपप्लेटाउन चली गई.

वहां पहुंचने में बेले को लगभग पूरा दिन लग गया. वो इतनी दूर अकेले कभी नहीं चली थी, और जब वो अंततः वहाँ पहुँची, तो वह बहुत थकी हुई थी. उसके मेजबानों ने उसे रात के लिए भोजन और बिस्तर का इंतज़ाम किया.

वर्षों बाद, बेले ने लिखा कि वो इतने "अच्छे, ऊंचे, साफ, सफेद, सुंदर बिस्तर" में कभी नहीं सोई थी. वो बिस्तर में घुसने ने बहुत डर रही थी, इसलिए वो ऊपर की बजाय बिस्तर के नीचे रेंगती रही. फिर उसे चिंता हुई कि वो अपने मेजबानों को नाराज कर सकती थी, इसलिए वो रेंगकर बाहर निकली और सुंदर बिस्तर पर सो गई.

अगले दिन वो कचहरी गई. वहां, उसने पीटर को राज्य से बाहर बेचने वाले व्यक्ति के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई. उसका नाम सोलोमन गेडनी था. जज बेले से सहमत थे. बिक्री कानून के खिलाफ थी. मिस्टर गेडनी को विश्वास नहीं हुआ कि एक गुलाम के लिए इतना सब हंगामा खड़ा होगा. उस कार्यवाही में कई महीने लगे, लेकिन अंत में पीटर को उसकी मां को लौटा दिया गया. (चूंकि गेडनी ने पीटर को बेचकर कानून तोड़ा था, इसलिए पीटर अब स्वतंत्र था.) बेले जीत गई थी. वो इस तरह का केस जीतने वाली देश की पहली अश्वेत महिलाओं में से एक थीं.

बेले और पीटर किंग्स्टन में वान वैगनर्स के पास रहे और उन्होंने उनके लिए काम किया. सोफिया, जो लगभग दो साल की थी, अपनी बहनों - डायना, हन्नाह और एलिजाबेथ के साथ ड्यूमोंट में रहने चली गई. बेले के पति टॉम को 4 जुलाई, 1828 को रिहा किया गया, लेकिन वो न्यू पाल्ट्ज में ही रहा. टॉम का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, जिससे टॉम और बेले का एक साथ रहना मुश्किल हो गया था. साल के अंत तक टॉम की मृत्यु हो गई. उसे स्वतंत्रता का सिर्फ थोड़ा सा स्वाद चखा था.

वान वैगनर्स के साथ जीवन आरामदायक था. बेले अपनी बेटियों को जाकर मिल सकती थी. फिर वो और पीटर एक मेथोडिस्ट चर्च में शामिल हुए.
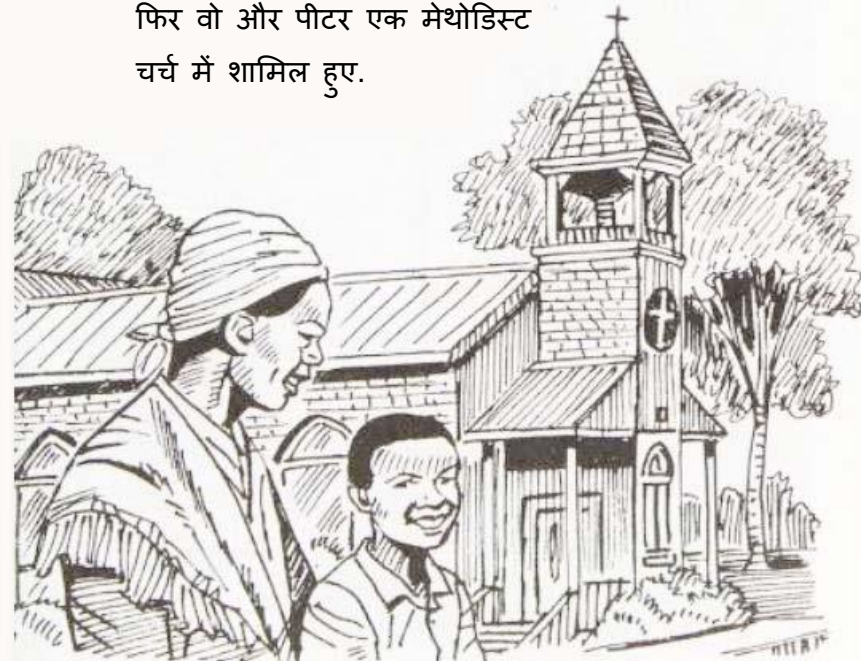
वहां उसकी मुलाकात न्यूयॉर्क शहर की एक शिक्षिका मिस गीर से हुई. मिस गीर को बेले पसंद आई और उन्हें पीटर बहुत होशियार लगा. मिस गीर ने बेले को न्यूयॉर्क शहर जाने के लिए प्रोत्साहित किया. वहां काफी नौकरियां थीं. सबसे अच्छी बात यह थी कि न्यूयॉर्क शहर में काले बच्चों के लिए स्कूल थे.

बेले ने अपनी बेटियों के साथ इसकी चर्चा की और उन्हें भी वो विचार अच्छा लगा.

बेले की बेटियों ने सोफिया की देखभाल करने का वादा किया. इसलिए बेले ने न्यूयॉर्क जाने का फैसला किया. यह फैसला उसने खुद किया था. उसे किसी मालिक की अनुमति नहीं माँगनी पड़ी. 1829 की गर्मियों के अंत में, बेले और पीटर हडसन नदी में एक नाव पर चढ़े. वे न्यूयॉर्क शहर जा रहे थे. वहां पर एक नई जिंदगी उनका इंतजार कर रही थी.
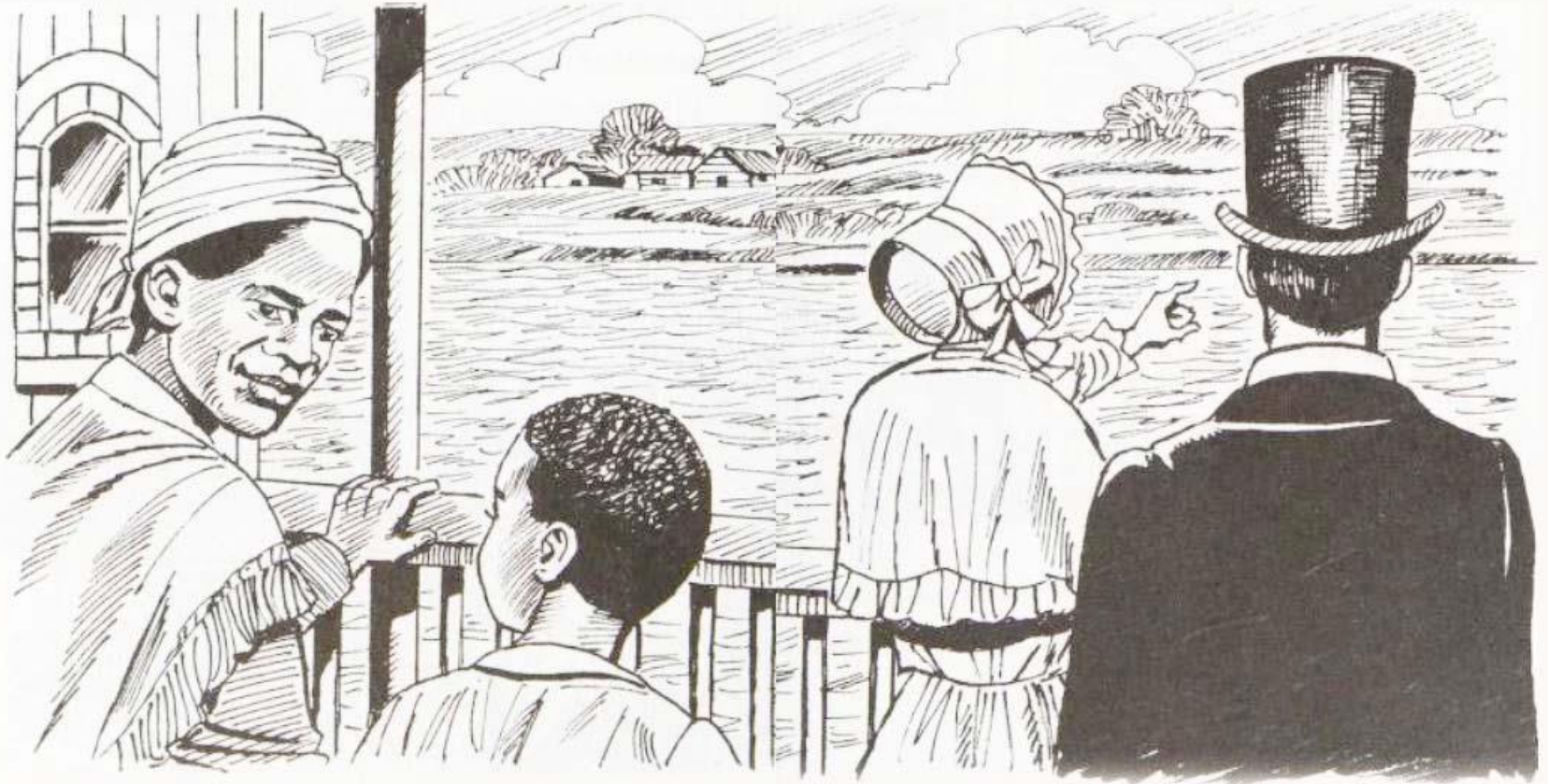
अध्याय 3

बड़ा शहर

1829 में, न्यूयॉर्क शहर में लगभग दो लाख लोग रहते थे. बेले ने इतनी भीड़ पहले कभी नहीं देखी थी.

लेकिन जल्द ही वो शहर के रास्तों के बारे में सीख गई. पहले उसने व्हिटिंग नाम के एक परिवार के यहाँ नौकरी की और फिर एक दूसरे परिवार गैटफील्ड के यहाँ. बाद में, उसने एक ऐसे परिवार के लिए काम किया, जो एक अखबार निकालते थे. पीटर स्कूल जाता था.

बेले, ज़िओन चर्च में शामिल हो गई. बाद में उस चर्च का नाम मदर ज़िओन अफ्रीकन मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च पड़ा. चर्च की स्थापना 1796 में हुई थी. बिशप ने जरीना-ली, नामक एक महिला को भी पादरी बनाया था. बेले उसके उदाहरण से बहुत प्रेरित हुई. इसका मतलब था कि बेले भी कभी एक महिला पादरी बन सकती थी.

जरीना-ली

बेले को चर्च बहुत पसंद आया और उसे वहां शांति और आराम मिला.

बेले ने चर्च में मदद करना शुरू किया. सबसे पहले, वो एक ऐसे समूह में शामिल हुई जो चर्च की शिक्षा और सन्देश को गरीब लोगों तक पहुँचाता था. लेकिन बेले को लगा कि लोगों को भजनों और उपदेशों से कुछ ज्यादा की जरूरत थी. लोगों को भोजन, कपड़े और रहने के लिए एक अच्छी जगह की ज़्यादा आवश्यकता थी. इसलिए उसने बेघर महिलाओं के एक आश्रय स्थल में मदद करना शुरू की.
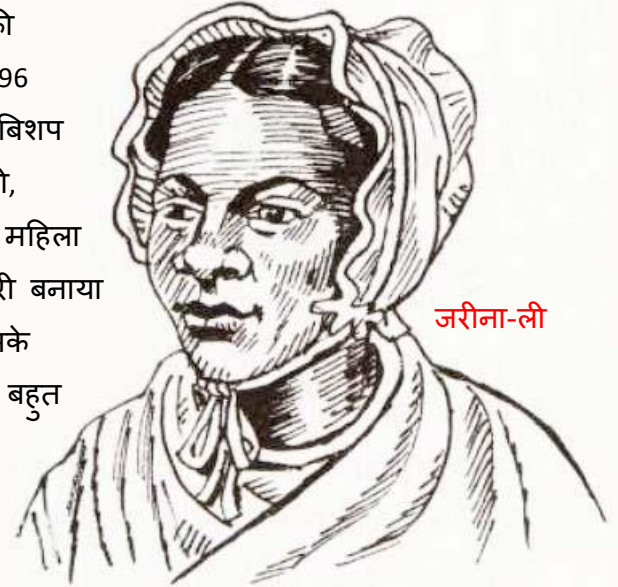
एक रविवार को प्रार्थना सेवा के बाद, एक पुरुष और एक महिला ने बेले से संपर्क किया. धीरे-धीरे वे उसे जानने लगे. बाद में यह पता चला कि वे उसकी बहन सोफिया और भाई माइकल थे. इतने सालों में उन्होंने एक-दूसरे को नहीं देखा था! सोफ़िया और माइकल भी अब आज़ाद थे. उन्होंने सुना था कि वो न्यूयॉर्क शहर में थी और ज़िओन चर्च में थी, इसलिए वे उसे खोजने आए. तीनों भाई-बहन मिलकर बहुत खुश हुए.

अब बेले अपने नए जीवन में अच्छा कर रही थी, लेकिन पीटर नहीं. उसने स्कूल छोड़ दिया था. वो नौकरी पर टिका नहीं रह सका. वो बड़े लड़कों के साथ घूमता था जो उसे चोरी करने के लिए प्रोत्साहित करते थे, और फिर वो पकड़ा गया - एक से अधिक बार. बेले ने उसकी मदद करने की कोशिश की, लेकिन वो आसान नहीं था. पीटर ने बेले की बात नहीं मानी. वो लगातार परेशानी में पड़ता रहा. अंत में, बेले ने उसे नाविक बनने के लिए मना लिया. बेले ने सोचा कि वहां के कठोर नियम पीटर के लिए अच्छे होंगे.

उसने अपने चर्च में प्रार्थना और गीतों का नेतृत्व करना भी शुरू किया. लोग उसकी बुलंद आवाज और शक्तिशाली शब्दों से प्रभावित हुए. चर्च ने पूरे शहर में प्रार्थना सभायें आयोजित कीं. बेले उनमें शामिल हुई. लोग सिर्फ उसका उपदेश सुनने आते थे. ईश्वर में उसके अडिग विश्वास ने, दूसरों को भी प्रेरित किया.

1839 में पीटर, "जोन ऑफ नानटकेट" नामक जहाज पर रवाना हुआ. बेले को उसकी याद आई. बेले उसे लिखना चाहती थी, लेकिन उसे लिखना नहीं आता था. इसलिए बेले ने अन्य लोगों से पीटर को पत्र लिखवाए.

बेले ने लोगों को बताया कि वे क्या लिखें. लेकिन पीटर ने केवल कुछ ही पत्रों के उत्तर दिए, और फिर उसने उत्तर देना बिल्कुल बंद कर दिया. बेले ने पीटर से फिर कभी नहीं सुना. लेकिन बेले को विश्वास था कि भगवान पीटर की रक्षा कर रहे होंगे.

इस बीच बेले अपने जीवन के बारे में सोच रही थी. उसके लिए अब चीजें अच्छी थीं. उसके पास रहने की जगह और नौकरी थी. वो खुद अच्छा खाना खा सकती थी और कपड़े पहन सकती थी. उसके पास उसका चर्च और उसके दोस्त थे. लेकिन यह पर्याप्त नहीं था - वो उससे कुछ अधिक चाहती थी. लेकिन वो यह नहीं जानती थी कि वो क्या करे.

एक दिन बेले प्रार्थना में गहरी डूबी थी जब उसने अपने सिर में एक आवाज सुनाई दी जो कह रही थी, "तुम पूर्व की ओर जाओ." उसका क्या मतलब हो सकता था? बेले का मानना था कि वे शब्द सीधे भगवान से आए थे. वो उसे दिशा-निर्देश दे रहे थे. भगवान उसका मार्गदर्शन कर रहे थे. दूसरे लोग सोचते थे कि वो पागल हो गई थी, लेकिन बेले ने उनकी परवाह नहीं की. भगवान उससे बोले थे. वो उनके शब्दों को ज़रूर सुनेगी.

अध्याय 4

एक नया नाम, एक नई पुकार

बेले ने अपनी नौकरी छोड़ने का नोटिस दिया. अगली सुबह, 1 जून, 1843, उसने फेरी (नाव) की सवारी के लिए दो शिलिंग का भुगतान किया, जो लगभग पच्चीस सेंट के बराबर था.

वो पूर्व की ओर कनेक्टिकट जा रही थी. उसने अपने साथ सिर्फ एक तकिए का गिलाफ लिया. शाम होते-होते वो शहर से बहुत दूर निकल चुकी थी. वो एक क्वेकर के घर पानी मांगने के लिए रुकी. महिला ने उसका नाम पूछा. उसने कहा कि उसका नाम सोजॉर्नर था. वो एक घुमक्कड़ यात्री थी, जो एक स्थान पर बहुत लंबे समय तक नहीं टिकती थी. और सोजॉर्नर ने वही करने की योजना बनाई. अब वो एक घुमक्कड़ प्रचारक बनने जा रही थी.

महिला ने सोजॉर्नर से उसका दूसरा नाम पूछा. पहले सोजॉर्नर हिचकिचाई. उसका दूसरा नाम कभी था ही नहीं. वो हमेशा हार्डनबर्ग की बेले कहलाती थी. या फिर ड्यूमॉन्ट की बेले. उसे उसके मालिकों के नाम से पुकारा जाता था. ये सभी दास नाम थे. उसका क्या नाम था?

फिर उसे कुछ समझ में आया. वो खुद को परमेश्वर के लिए समर्पित कर रही थी. और परमेश्वर का वचन सत्य था. सोजॉर्नर ने उस महिला को बताया कि उसका दूसरा नाम "ट्रुथ" यानि सच था. उसका नया नाम उसके नए जीवन के अनुकूल था: सोजॉर्नर ट्रूथ.

जब उसने अपना नया नाम अपनाया तब सोजॉर्नर छत्तीस वर्ष की थी. फिर उसने एक नया जीवन शुरू किया. उसने गर्मियों और पतझड़ में न्यू यॉर्क, कनेक्टिकट और मैसाचुसेट्स में प्रचार किया. चर्चों और बाहरी सभाओं में लोग उसे सुनने आते थे.

1843 की सर्दियों तक वह थकी गई थी. उसे आराम करने की जरूरत थी. फिर वो पश्चिमी मैसाचुसेट्स में एक नए समुदाय में शामिल हो गई. उसका नाम नॉर्थम्प्टन एसोसिएशन ऑफ एजुकेशन एंड इंडस्ट्री था.
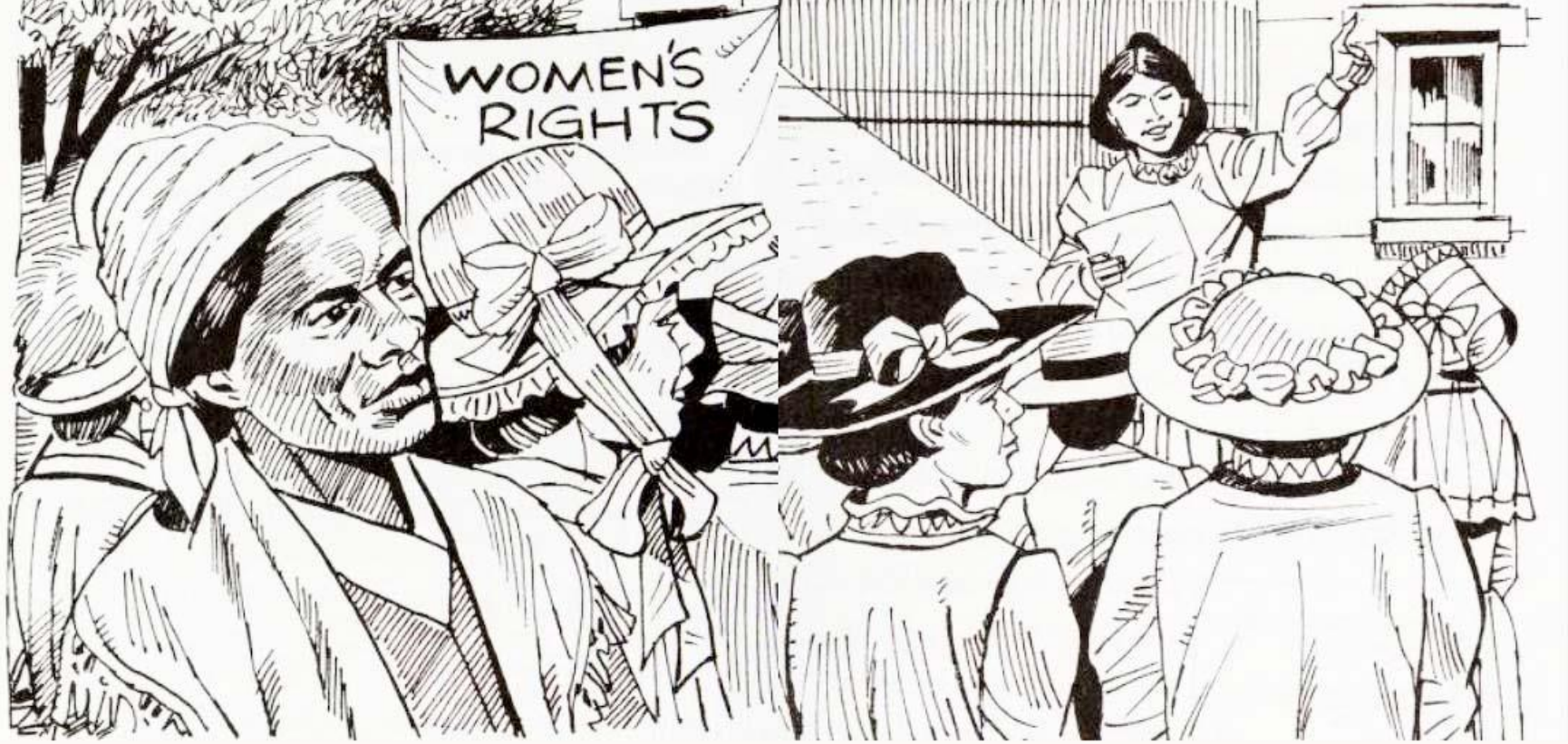
सोजॉर्नर ने वक्ताओं को महिलाओं के अधिकारों के बारे में बात करते हुए भी सुना. 1840 के दशक में, महिलाएं वोट नहीं दे सकती थीं और संपत्ति की मालिक भी नहीं बन सकती थीं. वे कानून पारित नहीं कर सकती थीं और नेता नहीं बन सकती थीं. बहुत से लोग सोचते थे कि किसी महिला के लिए पत्नी और माँ होना ही एकमात्र भूमिका थी. महिलाएं को बहुत कम वेतन वाली नौकरियां ही मिलती थीं.

लेकिन महिला अधिकार समर्थकों के अलग बहुत विचार थे. वे मानते थे कि महिलाओं और पुरुषों को कानून के तहत समान होना चाहिए.

1846 में, नॉर्थम्प्टन एसोसिएशन के पास पैसा खत्म हो गया और संस्था बंद हो गई. उससे सोजॉर्नर उदास हुई. वो फिर से वापस गोरे लोगों के लिए काम करने गई.

लेकिन जितने भी वक्ता सोजॉर्नर से मिले, उन सभी ने उसे जोश से भर दिया. उसकी ओलिव गिल्बर्ट के साथ दोस्ती हुई, जो नॉर्थम्प्टन एसोसिएशन के सदस्य और महिलाओं के अधिकारों के शुरुआती समर्थक थे. ओलिव ने सोजॉर्नर को, न्यूयॉर्क के सेनेका फॉल्स में पहले महिला अधिकार सम्मेलन के बारे में बताया. सोजॉर्नर ने महिलाओं के अधिकारों और एक पूर्व दास के रूप में अपने जीवन के बारे में सोचना शुरू किया.

फ्रेडरिक डगलस ने गुलामी के अपने जीवन की कहानी लिखी थी. अब ओलिव ने सोजॉर्नर को वैसा ही करने के लिए प्रोत्साहित किया.

NARRATIVE
OF
SOJOURNER TRUTH,
A
NORTHERN SLAVE,

WITH A PORTRAIT

BOSTON.
PRINTED FOR THE AUTHOR
1850.
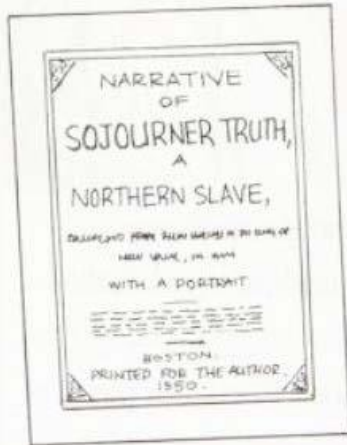
लेकिन सोजॉर्नर को लिखना नहीं आता था. लेकिन जिस तरह उन्होंने पीटर को पत्र लिखवाए थे, उसी तरह सोजॉर्नर ने ओलिव से अपनी जीवन की कहानी लिखवाई. विलियम लॉयड गैरिसन ने उसे छापा. उन्होंने परिचय भी लिखा. "नैरेटिव ऑफ़ सोजॉर्नर ट्रुथ: ए नॉर्दर्न स्लेव" पुस्तक 1850 में प्रकाशित हुई.

उसी वर्ष, सोजॉर्नर ने नॉर्थम्प्टन में, अपना एक छोटा सा घर बनवाया. उसकी कीमत तीन सौ डॉलर थी. उसने पैसे उधार लिए. वो उस क़र्ज़ को अपनी किताब की बिक्री से चुकाएगी. और वो घर सोजॉर्नर को कुछ ऐसा देगा जो उसके पास पहले कभी नहीं था: शांति और सुरक्षा.

सेनेका फॉल्स कन्वेंशन

19-20 जुलाई, 1848 को सेनेका फॉल्स, न्यूयॉर्क में महिलाओं के अधिकारों पर पहला बड़ा सम्मेलन हुआ. तीन सौ से अधिक लोगों ने उसमें भाग लिया. उसमें कई महत्वपूर्ण वक्ताओं ने बातचीत की और समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका पर जमकर चर्चा हुई.

सेनेका फॉल्स कन्वेंशन को महिला अधिकार आंदोलन की शुरुआत माना जाता है. 1861 में गृहयुद्ध शुरू होने तक विभिन्न स्थानों पर सम्मेलन एक वार्षिक कार्यक्रम होता था.

सेनेका में महिलाओं का अधिकार सम्मेलन

अध्याय 5

"क्या मैं एक महिला नहीं हूं?"

सोजॉर्नर की किताब अच्छी नहीं बिकी. लोग अभी तक उनका नाम नहीं जानते थे. वो फ्रेडरिक डगलस जितनी प्रसिद्ध नहीं थीं. सोजॉर्नर उन्मूलनवादी बैठकों में जाती रहीं और बैठकों के बाद अपनी किताबें बेचने की कोशिश करती रहीं.

1850 के अंत में एक बैठक में, सोजॉर्नर को बोलने के लिए आमंत्रित किया गया. वो एक आश्चर्य था. वो नहीं जानती थीं कि उन्हें बुलाया जाएगा. लेकिन वो "न" भी नहीं कहना चाहती थीं. उन्होंने अपने द्वारा लिखे एक भजन से शुरुआत की. फिर उन्होंने अपनी आपबीती कहानी सुनाई. उन्होंने एक गुलाम के रूप में अपने जीवन के बारे में बताया. उन्होंने अपने पिता की मृत्यु, खुद की पिटाई और पीटर को खोने के बारे में भी बात की. जब उन्होंने वो किया, तो लोग बहुत खुश हुए. बहुत से लोग रोए. सोजॉर्नर ने उस रात बहुत सारी किताबें बेचीं जिससे वो अपने घर का पैसे भुगतान कर पाईं और कुछ अलग से पैसे भी जमा कर पायीं. उस बैठक के बाद, उन्होंने फैसला किया कि वो अन्य दौरों पर जाएँगी. वो वहां अपने भाषण के बाद अपनी किताबें बेच सकती थीं. जीविकोपार्जन का यह एक अच्छा तरीका था.

1851 में, सोजॉर्नर ने ओहियो के अक्रोन में एक महिला अधिकार सम्मेलन में बात की. वहां सैकड़ों लोग मौजूद थे. कुछ ने महिलाओं के अधिकारों का समर्थन किया था. लेकिन बहुतों ने नहीं किया था. वक्ताओं ने खड़े होकर अपने भाषण दिए. क्या सोजॉर्नर उनमें से एक होंगी? वो नहीं हुआ. कुछ महिला अधिकार समर्थक नहीं चाहते थे कि वो बोलें.

वे नहीं चाहते थे कि उन्मूलनवादी मुद्दा और महिलाओं के अधिकारों का मुद्दा एक साथ मिले. उन्होंने तर्क दिया कि दोनों मुद्दों को अलग-अलग रखना बेहतर था. लेकिन अंत में सोजॉर्नर भाषण देने के लिए उठीं.

बोलते समय सोजॉर्नर शांत थीं. उनकी आवाज गहरी और शक्तिशाली थी. उनके शब्दों ने उनके दर्शकों को बैठकर सुनने के लिए मजबूर किया. यहाँ उनके भाषण के कुछ अंश हैं :

मैंने खेत जोते, और बीज बोए, और फसल को खलिहानों में इकट्ठा किया, और कोई मर्द उसमें मुझे हरा नहीं पाया — और क्या मैं स्त्री नहीं हूं? मैं उतना ही काम कर सकती थी और उतना ही खा सकती थी जितना कोई मर्द (जब मुझे खाने को मिलता था) और मैं पीठ पर चाबुक भी सहन कर सकती थी - और क्या मैं एक महिला नहीं हूं? मैंने झेला है. . . बच्चे जने हैं और सभी बच्चों को गुलाम जैसे बिकते हुए देखा है, और जब मैंने एक माँ के दुःख से पुकारा, तो यीशु के अलावा किसी ने भी मेरी आवाज़ नहीं सुनी - और क्या मैं एक महिला नहीं हूँ?

पहले तो भीड़ खामोश रही. इसके बाद लोग तालियां बजाकर सोजॉर्नर की जय-जयकार करने लगे.

सोजॉर्नर के जीवन में वो एक महान क्षण था. वो खड़े होकर अपना सच बोली थीं: सभी काले लोगों को और सभी महिलाओं को गोरे पुरुषों के समान अधिकार मिलने चाहिए थे. विवेकशील लोगों को उसके लिए काम करना पड़ेगा.

उस भाषण के बाद सोजॉर्नर की ख्याति बढ़ती गई. लोग उनसे मिलने आए. पत्रकारों ने उनके बारे में लिखा. यहां तक कि जो लोग उनसे सहमत नहीं थे, वे भी उनका सम्मान करने लगे. उन्होंने एक घोड़ा और बग्गी उधार ली और उन्होंने उस पर अपनी किताब की छह सौ प्रतियों का ढेर लादा.

महिलाओं के अधिकारों और गुलामी को समाप्त करने के बारे में भाषण देते हुए, सोजॉर्नर ने ओहियो और इंडियाना की यात्रा की. अक्सर, वो अपने घोड़े को दिशा चुनने देती थीं. उन्हें अपने खाने, कपड़ों या रहने की जगह की चिंता नहीं थी. उनकी गहरी आस्था थी. उसने उन्हें शक्ति दी. भगवान उनकी देखभाल करेगा.

अध्याय 6

युद्ध!

1857 में, जब वो साठ साल की थीं. सोजॉर्नर ने मैसाचुसेट्स, नॉर्थम्प्टन में अपना घर बेच दिया. वो बैटल-क्रीक के पास मिशिगन में हरमोनिया नामक एक छोटे से समुदाय में रहने चली गईं.

नॉर्थम्प्टन एसोसिएशन की तरह, हरमोनिया एक ऐसी जगह थी जहाँ काले और गोरे साथ-साथ रहते थे. वहां अश्वेतों के साथ समान व्यवहार किया जाता था. कई उन्मूलनवादी भी इस क्षेत्र में रहते थे. सोजॉर्नर को पड़ोसी के रूप में पाकर उन्होंने गौरवान्वित महसूस किया. और सोजॉर्नर भी दयालु, शिक्षित, पूर्वाग्रह से मुक्त लोगों के बीच रहकर खुश थीं. सोजॉर्नर अपनी बेटियों डायना और एलिजाबेथ और उनके बेटों, जेम्स कैलडवेल और सैमुअल बैंक्स के साथ समय बिताना चाहती थीं, जो सभी पास में रहते थे.

सैमी उनका पसंदीदा था. वो इलीशिबा का पुत्र था. वो सोजॉर्नर के छोटे-मोटे काम करता था. वो घर में भी सोजॉर्नर की मदद करता था. जब सैमी ने पढ़ना सीखा, तो उसने सोजॉर्नर को, बाइबल पढ़कर सुनायी. उसने सोजॉर्नर का हमेशा साथ दिया.

शायद सैमी ने सोजॉर्नर को अपने पीटर के बेटे की याद दिलाई, जो दूर चला गया था. सैमी और उसकी दादी काफी करीब आए.

इस बीच, गुलामी का सवाल संयुक्त राज्य को अलग-थलग कर रहा था. इस समय तक सभी उत्तरी राज्यों में गुलामी को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया था.

उत्तर में कई लोगों ने सोचा कि गुलामी देश में हर जगह खत्म होनी चाहिए. लेकिन दक्षिणी राज्य अभी भी अपने गुलामों से चिपके हुए थे. अमीर दक्षिणी लोगों के पास बड़े प्लांटेशन्स थे और उन्हें कपास, चावल और तम्बाकू जैसी फ़सलें बोने और काटने के लिए मुफ्त के मज़दूरों की आवश्यकता थी. हालाँकि सरकार ने समस्या से निपटने और देश को संपूर्ण रखने के लिए अलग-अलग कानून पारित किए, लेकिन उनकी वो नीति काम नहीं कर रही थी.

अंत में, 1861 में, ग्यारह दक्षिणी राज्य टूट गए और उन्होंने अपना खुद का देश बनाया: अमेरिका के कॉन्फेडरेट स्टेट्स. उसके बाद गृह युद्ध शुरू हो गया. उत्तरी सैनिकों ने दक्षिणी सैनिकों के खिलाफ लड़ाई लड़ी.

सोजॉर्नर का पोता, जेम्स कैलडवेल उत्तरी सेना के साथ लड़ने गया. उसे बहुत गर्व था. उसने अन्य अश्वेत पुरुषों को सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित किया. 1863 में, डेट्रायट में अश्वेत सैनिकों का एक बड़ा समूह युद्ध की तैयारी कर रहा था. सोजॉर्नर ने बैटल-क्रीक, मिशिगन के लोगों से भोजन दान करने को कहा.

सोजॉर्नर, थैंक्सगिविंग डिनर के लिए सैनिकों के लिए खाना लेकर गईं. युवकों को प्रोत्साहित करने के लिए, वो भाषण देतीं और गाने गाती थीं. वो अपने शब्दों से उनका उत्साह बढ़ाना चाहती थीं.

दास दक्षिण से भागकर उत्तर की ओर आ रहे थे. कुछ सेना में शामिल हो गए थे. अन्य लोग केवल मुक्त, स्त्री और पुरुष के रूप में अपना एक नया जीवन जीना चाहते थे. इनमें से हजारों पूर्व दास वाशिंगटन, डीसी में उतरे. अब वे आजाद थे.

लेकिन उनके पास कोई नौकरी नहीं थी. उनके पास घर नहीं थे. उनका क्या होगा? सोजॉर्नर को पता था कि उन्हें मदद की जरूरत थी. उन्होंने वहां जाकर उनकी मदद करने का फैसला किया.

1864 में, सोजॉर्नर वाशिंगटन पहुंची. उन्होंने जो देखा वह भयानक था. पूर्व दास टूटी झोंपड़ियों में रह रहे थे. उनके पास पर्याप्त भोजन या कपड़े नहीं थे. उन्हें नहीं पता था कि वे खुद की देखभाल कैसे करें क्योंकि उन्हें पहले कभी ऐसा करना करना नहीं पड़ा था. लेकिन सोजॉर्नर के पास वो अनुभव था. वो उन्हें वो सब कुछ दिखाएंगी जो उन्हें जानने की जरूरत होगी.

For Aunty
Sojourner Truth
A. Lincoln
Oct 29. 1864

उनके काम पर लोगों ने ध्यान दिया और उनकी प्रशंसा हुई. वो राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से भी मिलीं. वो उनके लिए बहुत बड़ा सम्मान था! राष्ट्रपति ने सोजॉर्नर की "बुक ऑफ लाइफ", पर हस्ताक्षर भी किए. उन्होंने राष्ट्रपति के हस्ताक्षर पाकर बहुत गर्व महसूस किया.

युद्ध चार साल तक चला. लगभग सात लाख सैनिकों ने युद्ध में अपनी जान गंवाई.

अंत में, 9 अप्रैल, 1865 को कॉन्फेडरेट जनरल रॉबर्ट ई. ली ने आत्मसमर्पण कर दिया. गृहयुद्ध अंत में समाप्त हो गया. लेकिन दक्षिण की खंडहर जैसी हालत हो गई थी. मकान और संपत्ति नष्ट हो गई थी. शहरों को जला दिया गया था. उनके पुनर्निर्माण में वर्षों लगेंगे.

रॉबर्ट ई. ली

ली के आत्मसमर्पण के कुछ ही दिनों बाद, राष्ट्रपति लिंकन एक नाटक देखने गए. थिएटर में, जॉन विल्क्स बूथ नाम के एक दक्षिण-समर्थक अभिनेता ने राष्ट्रपति की गोली मारकर हत्या कर दी.

लिंकन का शव व्हाइट हाउस के ईस्ट रूम में रखा गया था. हजारों की संख्या में लोग शोक मनाने और श्रद्धांजलि देने पहुंचे. सोजॉर्नर और सैमी भी उनमें शामिल थे.

उपराष्ट्रपति एंड्रयू जॉनसन नए राष्ट्रपति बने. सोजॉर्नर ने उनसे मुलाकात की. वो वाशिंगटन में पूर्व दासों के बारे में चर्चा करना चाहते थे. उन्होंने सोजॉर्नर को अपनी चिंता बताई. सोजॉर्नर ने सुना लेकिन मदद करने का कोई वादा नहीं किया. सोजॉर्नर के पास उस दिन उनके साथ उनकी पुस्तक "बुक ऑफ़ लाइफ" थी. पर उन्होंने राष्ट्रपति जॉनसन से उस पर हस्ताक्षर करने को नहीं कहा.
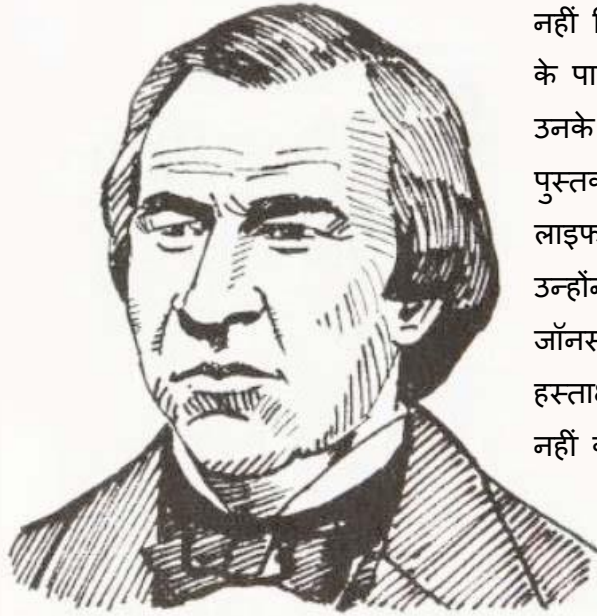
एंड्रयू जॉनसन

युद्ध समाप्त हो गया था और दास मुक्त हो गए थे. लेकिन नए मुक्त किए गए गुलामों की समस्याएं खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थीं. और महिलाओं ने महत्वपूर्ण स्वतंत्रता नहीं जीती थी. महिलाएं तब भी मतदान नहीं कर सकती थीं.

अब सोजॉर्नर लगभग सत्तर साल की थीं. वो थकती जा रही थीं. लेकिन उन्हें अभी भी बहुत काम करना बाकी था. सोजॉर्नर जानती थीं कि उन्हें चलते रहना होगा.

अध्याय 7

स्ट्रीटकार की सवारी

फ्रीडमैन अस्पताल के लिए काम करके सोजॉर्नर ने आम लोगों की मदद करना जारी रखा. वहां रहने वाले गरीब अश्वेतों के बीच "व्यवस्था, स्वच्छता, उद्योग और सदाचार को बढ़ावा देना" उनका काम था. सोजॉर्नर के लिए स्वच्छ रहना बहुत महत्वपूर्ण था. उनका मानना था कि स्वच्छता इंसान को, भगवान के करीब लाती थी.

पूर्व दासों में से कई प्लांटेशन मज़दूर थे. इसका मतलब था कि वे ज्यादातर केवल वही काम जानते थे जो उन्होंने खेतों में काम करते हुए सीखा था. और उन्हें उन सालों में उनकी कड़ी मेहनत के काम के लिए भुगतान नहीं मिला था. अब वे नए जीवन का निर्माण कैसे करेंगे? वे गरीब थे और उनके पास शहर में दी जाने वाली नौकरियों के लिए आवश्यक कौशल नहीं था.

सोजॉर्नर ने इस समस्या के बारे में बहुत सोचा. और वो उसे सुलझाने में मदद करने के लिए बिल्कुल सही व्यक्ति थीं.

फ्रीडमैन अस्पताल

वाशिंगटन, डीसी में अश्वेत समुदाय की सेवा करने के लिए 1862 में फ्रीडमैन अस्पताल शुरू किया गया था. वो अपनी तरह का पहला अस्पताल था जो उन पूर्व गुलामों को चिकित्सा उपचार प्रदान करता था जो आजादी की मांग करते हुए देश की राजधानी में आए थे. गृहयुद्ध के बाद, फ्रीडमैन अस्पताल हावर्ड यूनिवर्सिटी मेडिकल स्कूल का हिस्सा बन गया.

कई अच्छे विचारों वाले गोरे, पूर्व दासों को कौशल सिखा सकते थे - जैसे सिलाई या बुनाई या खाना बनाना. लेकिन सोजॉर्नर खुद गुलाम रह चुकी थीं. वो जानती थीं कि गुलाम लोग कैसा महसूस करते थे. वो उनकी समस्याओं और उनके दर्द को भी समझती थीं. उन्होंने उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया. सोजॉर्नर ने अश्वेत लोगों को यह भी बताया कि उन्हें उन "गोरे लोगों से प्यार करना सीखना चाहिए" जो उनकी भलाई के लिए काम कर रहे थे.

जब वो अस्पताल में काम करती थीं, तब सोजॉर्नर, फ्रीडमैन गांव के एक घर में रहती थीं. उनका पोता सैमी भी वहीं रहता था. अधिकांश दिन, सोजॉर्नर काम पर जाती थीं. दिन के अंत में, वो अपने घर पैदल चलकर जाती थीं. लेकिन एक दिन उन्होंने एक स्ट्रीटकार लेने का फैसला किया.

वो सड़क के किनारे इंतजार करती रहीं.

दो कारें उसके पास से गुजरीं लेकिन वे नहीं रुकी. अंत में, वो अपनी ऊँची, तेज़ आवाज़ में चिल्लाईं. उन्होंने कहा कि वो स्ट्रीटकार में सवारी करना चाहती थीं. तीसरी कार उनके लिए रुकी. लेकिन कंडक्टर ने उनसे बदतमीजी की और उन्हें धमकी दी. उसने सोजॉर्नर कुछ गालियां भी दीं. लेकिन ड्राइवर ने उन्हें कार की पिछली सीट पर बैठा लिया. वहीँ पर काले लोगों को बैठने के लिए मजबूर किया जाता था. सोजॉर्नर ने वही किया जो उन्हें बताया गया. लेकिन वो उससे नाराज थीं.

दूसरी बार जब वो एक अन्य स्ट्रीटकार में सवारी करना चाहती थीं, तो वो अपनी श्वेत मित्र लौरा हैविलैंड के साथ गईं. सोजॉर्नर ने पहले घुसने की कोशिश की. लेकिन कंडक्टर ने उन्हें एक तरफ धकेल दिया. कंडक्टर ने कहा कि सफेद महिला को पहले अंदर घुसना चाहिए. "मैं भी एक महिला हूँ!" सोजॉर्नर ने कहा. उससे कंडक्टर भड़क गया. उसने सोजॉर्नर को इतनी जोर से धक्का दिया कि उनके कंधे में बुरी तरह चोट आई.

सोजोर्नर सड़क पर उतर गईं, लेकिन कंडक्टर ने उनके साथ जो किया, वो उसे भूली नहीं. सोजोर्नर, कंडक्टर से बदल लेने के लिए उसे अदालत में ले गईं. यह पहली बार नहीं था जब वो किसी गोरे व्यक्ति को अदालत ले गई थीं. और पहले की तरह इस बार भी वो जीत गईं. कंडक्टर को नौकरी से निकाल दिया गया. उसके बाद, अन्य कंडक्टर उन काले लोगों को लेने के लिए रुके जो स्ट्रीटकार में सवारी करना चाहते थे. सोजॉर्नर ने एक और महत्वपूर्ण लड़ाई जीत ली थी.

लेकिन सोजॉर्नर की जीत टिकी नहीं. समय के साथ, नए कानून पारित किए गए. इन कानूनों ने काल लोगों को, गोरों से अलग रखा. वो लोग न तो एक साथ रह सकते थे और न ही एक-साथ स्कूल जा सकते थे. वे एक ही रेस्टोरेंट में खाना तक नहीं खा सकते थे. नए कानूनों को "जिम-क्रो" कानूनों के रूप में जाना जाता था. वे लंबे समय तक लगभग सौ साल तक दक्षिण में लागू रहे.

PUBLIC
SWIMMING
POOL
WHITES
ONLY

सार्वजनिक स्विमिंग पूल केवल गोरों के लिए

सोजॉर्नर पूर्व दासों की मदद करने के लिए दृढ़ संकल्पित थीं. 1867 के आसपास उन्हें एक शानदार आइडिया आया. दासों को उनके वर्षों की जबरन मेहनत के लिए उन्हें वापस भुगतान मिलना चाहिए. और वो भुगतान पैसे में नहीं बल्कि जमीन में. सरकार को पूर्व गुलामों को, पश्चिम में मुफ्त जमीन देनी चाहिए. तभी वे अश्वेत गुलाम, किसान बन सकते थे. और फिर वे उनके पास मौजूद कौशल का उपयोग कर सकते थे. किसानों के रूप में, वे उत्पादक नागरिक बनेंगे. फिर उन्हें किसी की मदद की जरूरत नहीं पड़ेगी.

सोजॉर्नर इस विचार से बहुत उत्साहित थीं. उनका नारा था "बीस एकड़ ज़मीन और एक खच्चर" 1868 में, फ्रीडमैन अस्पताल में सोजॉर्नर की नौकरी समाप्त हो गई. अब वो इस नए आंदोलन के लिए अधिक समय दे सकती थीं.

रोज़ा पार्क्स (1913 - 2005)

रोजा पार्क्स, एक अश्वेत महिला, मॉन्टगोमरी, अलबामा में एक दर्जी और हाउसकीपर के रूप में काम करती थीं.

1 दिसंबर, 1955 को वो बस के "काले" सेक्शन में बैठीं और उन्होंने एक सफेद यात्री को अपनी सीट देने से मना कर दिया. श्वेत खंड पहले से ही भरा हुआ था. पार्क्स की गिरफ़्तारी के बाद काले लोगों ने, बसों का बड़े पैमाने पर बहिष्कार किया. बहिष्कार का मतलब था कि मॉन्टगोमरी के अश्वेत नागरिकों ने, सार्वजनिक बसों में सवारी करने से मना कर दिया. आखिरकार, बस कंपनी ने अपनी नीति बदलनी पड़ी - हालांकि पार्क ने अपनी नौकरी खो दी और उन्हें नफरत भरे पत्र और धमकी भरे फोन कॉल मिलते रहे. अब उन्हें आधुनिक नागरिक अधिकार आंदोलन के नायकों में से एक माना जाता है.

सोजॉर्नर और सैमी ने यात्रा की. उन्होंने नए मुक्त अश्वेतों के लिए समान अधिकारों की बात की. वो महिलाओं के अधिकारों के बारे में भी लगातार बोलती रहीं.

सोजॉर्नर वाशिंगटन, डीसी लौट आईं. 31 मार्च, 1870 को, उन्होंने राष्ट्रपति यूलिसिस एस. ग्रांट से भेंट की. राष्ट्रपति हाल ही में चुने गए थे. सोजॉर्नर अपने भूमि-अनुदान प्रस्ताव के लिए राष्ट्रपति का समर्थन चाहती थी. राष्ट्रपति ने उनकी बात सुनी, हालाँकि उनकी बातचीत को लिखा नहीं गया. सोजॉर्नर राष्ट्रपति की प्रतिक्रिया से प्रोत्साहित दिखीं. उन्होंने राष्ट्रपति से उनकी अपनी "बुक ऑफ लाइफ" पर हस्ताक्षर करने को कहा. और जब राष्ट्रपति दूसरे कार्यकाल के लिए चुनाव लड़े, तो उन्होंने सोजॉर्नर का समर्थन किया. लेकिन ग्रांट ने सोजॉर्नर को निराश किया. उन्होंने सोजॉर्नर को वो मदद नहीं दी जिसकी उनसे अपेक्षा थी.
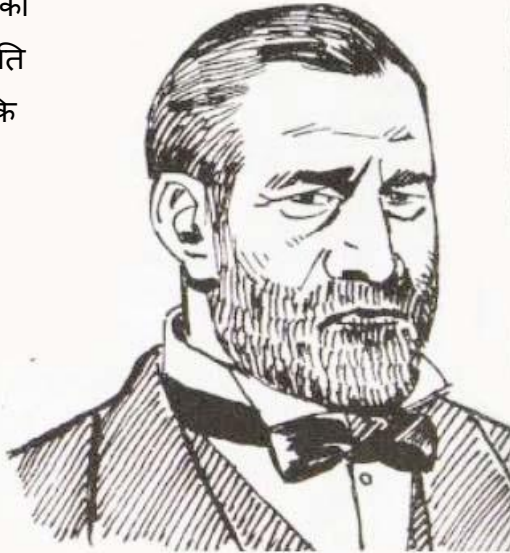
यूलिसिस एस. ग्रांट

सोजॉर्नर अपने विचार को कांग्रेस तक लेकर गईं. वो कैपिटल बिल्डिंग में दिखाई दीं. अपनी सफेद टोपी, सिलेटी ड्रेस और सफेद शॉल में वह सुंदर और गौरवान्वित दिख रही थीं. उन्होंने सीनेटरों से जो कहा, उसका अंश यहां है:

हम अश्वेत लोग इस गणतंत्र के लिए धन के स्रोत रहे हैं. हमारे श्रम ने देश को कपास की आपूर्ति

की है...... और बड़ी संख्या में रोजगार और सहायता प्रदान की, जिससे सरकार को राजस्व प्राप्त हुआ.. हमारी नसें और हमारे तंतु, हमारे आंसू और हमारा खून, इस देश के लोभ की वेदी पर बलिदान हुआ है. हमारा अवैतनिक श्रम देश की वित्तीय सफलता में एक महत्वपूर्ण कदम रहा है. उसका कुछ लाभांश निश्चित रूप से हमें मिलना चाहिए.

मैसाचुसेट्स के सीनेटर चार्ल्स सुमनेर उनके शब्दों से बहुत प्रभावित हुए. उन्होंने कहा कि अगर वो साबित कर सकें कि उस योजना के लिए व्यापक समर्थन था तो वो एक विधेयक पारित करने की कोशिश करेंगे. सोजॉर्नर तुरंत काम पर लग गईं. उन्होंने एक याचिका लिखी – एक दस्तावेज जिसमें लिखा था कि वो काले लोगों के लिए क्या प्राप्त करना चाहती थीं. नीचे हस्ताक्षरों के लिए काफी जगह थी.

चार्ल्स सुमनेर

याचिका पर हस्ताक्षर करने वाला हर व्यक्ति उनकी योजना से सहमत था. सैमी और उनके दूसरे पोते ने, सोजॉर्नर की उस काम में मदद की.

सोजॉर्नर और उनके पोते ने आठ महीने सड़क पर बिताए. वे न्यू इंग्लैंड से डेलावेयर, मैरीलैंड, न्यू जर्सी, पेंसिल्वेनिया, न्यूयॉर्क, वर्जीनिया, वेस्ट-वर्जीनिया और वाशिंगटन, डीसी भी गए. इनमें से प्रत्येक स्थान पर उन्होंने भाषण दिए और लोगों से अपनी कहानी साझा की.

1 जनवरी, 1871 को सोजॉर्नर ने, बोस्टन के ट्रेमोंट हॉल में एक भीड़ को भाषण दिया. उन्होंने लोगों को अपने बचपन, तहखाने, मारपीट और अपने परिवार से बिछड़ने के दर्द के बारे में बताया. उनकी बात सुनने के बाद लोग याचिका पर हस्ताक्षर करने को तुरत राज़ी हो गए.

जबकि वो अभी भी मैसाचुसेट्स में थी, सोजॉर्नर को अपने पुराने दोस्त ओलिव गिल्बर्ट से एक अच्छी खबर मिली. ओलिव ने सोजॉर्नर की आत्मकथा लिखी थी कि वो महिलाओं के अधिकारों की समर्थक थीं. फिर ओलिव ने सोजॉर्नर की याचिका के लिए और अधिक हस्ताक्षर प्राप्त करने में मदद की.

सोजॉर्नर हजारों हस्ताक्षर एकत्र करने में सफल रहीं. अब उनकी बारी वाशिंगटन लौटने की थी. निश्चित रूप से सीनेटर सुमेर देखेंगे कि सोजॉर्नर के विचार के लिए समर्थन था. उन्हें सीनेटर के वचन पर विश्वास था. वो ज़रूर सोजॉर्नर की मदद करेंगे.

लेकिन जब वो वहां पहुंची, तो सोजॉर्नर को पता चला कि सीनेटर की हाल ही में मृत्यु हो गई थी. और उसके साथ ही सोजॉर्नर्स का महान विचार भी दफ़न हो गया.

किसी और को इस पर विश्वास नहीं हुआ. सरकार ने उन्हे अपना समर्थन नहीं दिया. पहले के दासों को बीस एकड़ ज़मीन और उनका खच्चर नहीं मिली.

निराश और दुखी होकर सोजॉर्नर वापस मिशिगन चली गईं. वो थकी हुई थीं और उसे घर की याद आ रही थी. सैमी भी बीमार था. पहले तो उसकी बीमारी गंभीर नहीं लग रही थी. लेकिन उसकी बुखार और खांसी बिगड़ती गई.

फरवरी 1875 में सैमी की मृत्यु हो गई. वो अभी पच्चीस वर्ष का भी नहीं था.

सोजॉर्नर को उसकी बहुत याद आई. सैमी, सोजॉर्नर का निरंतर साथी रहा था. और उसने सोजॉर्नर की कई तरह से मदद की थी. अब सोजॉर्नर के पास पढ़ने वाला और उनके पत्र लिखने वाला भी कोई नहीं था. सोजॉर्नर को बहुत बुरा लगा, वो अब और जीना नहीं चाहती थीं.

सोजॉर्नर ने बैटल-क्रीक में घर जाने का फैसला किया. उन्होंने अपने परिवार को बताया कि वो मरने के लिए घर जा रही थीं. लेकिन सोजॉर्नर गलत थीं. उन्हें अभी भी बहुत काम करना बाकी था.

अध्याय 8

अंतिम वर्ष

प्रवासी महिलाओं के अधिकारों के विचार के प्रति प्रतिबद्ध रहीं. वो महिला आंदोलन के सबसे प्रसिद्ध नेताओं में से दो - एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन और सुसान बी. एंथोनी को जानती थीं. स्टैंटन और एंथोनी का ध्यान मतदान के अधिकार पर केंद्रित था.

समाज को बदलने के लिए महिलाओं को नए कानूनों के लिए मतदान करने में सक्षम होना चाहिए था. उन्हें उन नेताओं को वोट देने की जरूरत थी, जिन पर वे विश्वास करती थीं. वोट के बिना, महिलाओं के पास न तो उनकी आवाज थी और न ही कोई शक्ति.

काले पुरुषों को 1870 में मतदान का अधिकार दिया गया था. फिर भी, कई दक्षिणी राज्यों ने उन्हें मतदान करने से रोकने के तरीके खोज निकाले थे. लेकिन अश्वेत महिलाओं की हालत और भी खराब थी. गोरी महिलाओं की तरह ही काली महिलाओं के लिए मतदान करना कानूनी नहीं था.

सोजॉर्नर, स्टैंटन और एंथोनी से सहमत थीं. वो सभाओं में जाती थीं और महिलाओं के अधिकारों के बारे में भाषण देती थीं. उन्होंने कहा कि महिलाएं अच्छी नेता, न्यायाधीश और विधायक बन सकती थीं. अक्सर, इन सभाओं में वो अकेली अश्वेत महिला होती थीं. और वो आंदोलन नेताओं में अकेली गरीब महिला थीं.

सुसान ब्राउनेल एंथोनी

(1820-1906)

सुसान ब्राउनेल एंथोनी और एलिज़ाबेथ कैडी स्टैंटन, महिला अधिकार आंदोलन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से दो थीं. स्टैंटन, सेनेका फॉल्स कन्वेंशन की प्रमुख आयोजक थीं. उन्होंने और एंथोनी ने 1851 में, एक-साथ काम करना शुरू किया. उनका लक्ष्य गुलामी को खत्म करना और महिलाओं के लिए समान अधिकार प्राप्त करना था.

एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन

(1815-1902)

स्टैंटन ने महिलाओं को समान वेतन और उनकी संपत्ति का अधिकार दिलाने पर अपना ध्यान केंद्रित किया. 1872 में एंथनी को उनके गृहनगर रोचेस्टर, न्यू यॉर्क में मतदान करने के लिए गिरफ्तार किया गया था. और 1878 में एंथनी और स्टैंटन ने महिलाओं को वोट देने का अधिकार देने के बारे में एक संशोधन कांग्रेस को पेश किया. वे अपने सपने को साकार होते देखने के लिए जीवित नहीं रहीं, लेकिन अंतत: उन्नीसवां संशोधन 1920 में पारित हुआ.

महिला अधिकारों के आंदोलन में अधिकांश नेताओं के पास पैसा था. उन्हें जीविकोपार्जन की चिंता नहीं थी. उन्हें काम करने की बिल्कुल जरूरत नहीं थी. इस वजह से उन्होंने गरीब महिलाओं की जरूरतों के बारे में नहीं सोचा. सोजॉर्नर उनसे बहुत अलग थीं. उन्होंने एक अश्वेत महिला के रूप में संघर्ष किया, और उन्होंने एक गरीब महिला के रूप में भी संघर्ष किया था.

उन्होंने बताया कि पुरुषों और महिलाओं को समान काम के लिए समान रूप से भुगतान नहीं किया जाता था. इससे महिलाओं के लिए खुदका और अपने परिवार का भरण पोषण करना मुश्किल हो गया था. सोजॉर्नर को वो अनुचित लगा. वो चाहती थीं कि महिला अधिकारों के समर्थक भी, समान वेतन के मुद्दे पर ध्यान दें. जब तक महिलाओं को समान वेतन नहीं मिलेगा, तब तक वे समान नहीं होंगी.

सोजॉर्नर का यह भी मानना था कि महिलाओं को बदलाव लाने की जरूरत थी, न कि सिर्फ उनके बारे में बात करने की. उन्होंने अपने विश्वासों को कार्रवाई में बदला. 1872 में, उन्होंने बैटल-क्रीक, मिशिगन में मतदान करने की कोशिश की. लेकिन उन्हें वापिस भेज दिया गया. वो जानती थीं कि उन्हें लड़ते रहना होगा. लेकिन वो महिलाओं को वोट देने का अधिकार देखने के लिए जीवित नहीं रहीं.

1878 में, सोजॉर्नर, मिशिगन के छत्तीस शहरों में भाषण देने के दौरे पर गईं. वो तब इक्यासी साल की थीं. उसी वर्ष, वो रोचेस्टर, न्यूयॉर्क में महिला अधिकार सम्मेलन में तीन प्रतिनिधियों में से एक थीं. यह सम्मेलन, सेनेका फाल्स में पहले सम्मेलन की तीसवीं वर्षगांठ पर आयोजित किया गया था.

1848 के सम्मेलन के बाद से कुछ प्रगति हुई थी. 1851 में, अमेलिया जेनक्स ब्लूमर ने महिलाओं के लिए ड्रेस-सुधार आंदोलन शुरू किया. असहज लंबी स्कर्ट के बजाए, उन्होंने महिलाओं से छोटी स्कर्ट के नीचे ढीली पैंट पहनने का आग्रह किया. इस नई पोशाक से उनके लिए घूमना-फिरना आसान हो गया.

अमेलिया जेनक्स ब्लूमर

पैंट का नाम उनके नाम पर रखा गया था: ब्लूमर्स. 1869 में, महिलाओं ने व्योमिंग क्षेत्र में निर्णायक मंडल में सेवा देना शुरू किया. लेकिन ये छोटे कदम थे. अभी और बहुत कुछ किया जाना बाकी था.

सोजॉर्नर अब वो नहीं कर सकती थीं. उन्होंने काले लोगों के अधिकारों के लिए लड़ते हुए कई साल बिताए थे. उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ते हुए भी कई साल बिताए थे. अब वो बूढ़ी हो चुकी थीं. और वो थक भी गई थीं. उन्होंने कंसास की एक अंतिम यात्रा की. वो पूर्व के दासों से बात करना चाहती थीं जो पश्चिम जाने और सरकार द्वारा उन्हें दी गई जमीन पर खेती करने की योजना बना रहे थे. फिर वो अच्छे के लिए बैटल-क्रीक लौट आईं.

सोजॉर्नर ट्रुथ की मृत्यु 26 नवंबर, 1883 को हुई. वो छियासी वर्ष की थीं. उनके अंतिम संस्कार में एक हजार लोगों ने भाग लिया. उन्हें उनके पोते सैमी के पास ओक हिल कब्रिस्तान में दफनाया गया. बैटल क्रीक के एक अखबार ने लिखा, "इस देश ने अपने सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक को खो दिया है."

लेकिन सोजॉर्नर ट्रूथ की साहसिक भावना जीवित रही. उनका काम और उनके शब्द अभी भी लोगों प्रेरणा और दिशा देते हैं. वो अमेरिका की महान नायकों में से एक थीं और उन्हें हमेशा याद किया जाएगा.

सोजॉर्नर टुथ मेमोरियल फ्लोरेंस, एमए

सोजोरनर ट्रुथ के जीवन की समयरेखा

1797	इसाबेला का जन्म बेट्सी और जेम्स के यहाँ, उल्स्टर काउंटी, न्यूयॉर्क में हुआ
1806	जॉन नेली को बेची गईं
1808	मार्टिन श्राइवर को बेची गईं
1810	जॉन ड्यूमॉन्ट को बेची गईं
1815	को रॉबर्ट ड्यूमॉन्ट से प्यार हो गया
1817	थॉमस से शादी की
1818	पहली बेटी डायना का जन्म
1826	जॉन ड्यूमॉन्ट के घर से भागीं
1828	अपने बेटे पीटर के साथ न्यूयॉर्क शहर चली गईं
1843	अपना नाम सोजॉर्नर ट्रूथ में बदला
1850	सोजॉर्नर ट्रुथ की आत्मकथा प्रकाशित हुई
	नॉर्थम्प्टन में एक घर बनाया
1851	उसे प्रसिद्ध "आइन्ट आई ए वुमन?" भाषण दिया
1857	बैटल-क्रीक, मिशिगन में रहने चली गईं
1865- 1868	वाशिंगटन, डीसी में मुक्त पुरुषों के अस्पताल के साथ काम किया
1883	26 नवंबर को मिशिगन में निधन

दुनिया की समयरेखा

1789	जॉर्ज वाशिंगटन संयुक्त राज्य अमेरिका के पहले राष्ट्रपति चुने गए
	फ्रांसीसी क्रांति 14 जुलाई को शुरू हुई
1809	अब्राहम लिंकन का जन्म कैंटकी में हुआ
1815	एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन का जन्म न्यूयॉर्क के जॉनस्टाउन में हुआ
1831	नेट टर्नर, एक बैपटिस्ट गुलाम उपदेशक, साउथेम्प्टन काउंटी, वर्जीनिया में एक विद्रोह का नेतृत्व किया
1848	न्यूयॉर्क के सेनेका फॉल्स में पहला महिला अधिकार सम्मेलन आयोजित हुआ
1850	जैकब फसेल ने मैरीलैंड के बाल्टीमोर में पहली आइसक्रीम फैक्ट्री खोली
1852	हैरियट बीचर स्टो का उपन्यास "अंकल टॉम्स केबिन" प्रकाशित हुआ
1861	गृहयुद्ध छिड़ गया
1863	मुक्ति उद्घोषणा पर हस्ताक्षर किए गए - संघ में दासों को मुक्त किया गया
1865	गृहयुद्ध समाप्त
	वाशिंगटन, डीसी में अब्राहम लिंकन की हत्या कर दी गई
	लुईस कैरोल की "एलिस एडवेंचर्स इन वंडरलैंड" प्रकाशित
1869	विलियम फिनले सेम्पल ने च्युइंग गम को पेटेंट कराया
1879	थॉमस अल्वा एडिसन ने पहला व्यावहारिक प्रकाश बल्ब विकसित किया
1920	उन्नीसवां संशोधन को समर्थन मिला; महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला